

**Priti Singh**

**Assistant Professor**

**Department of B. Ed.**

**The Graduate School College for Women,  
Jamshedpur**

**B. Ed. 2nd Semester**

**Paper- VIIA(Pedagogy of Social Science-Geography)**

**भूगोल में सहसंबंध**

**Correlation in geography**

विगत लंबे समय में विभिन्न विषयों को पृथक- पृथक रूप में पढ़ाया जाता था और छात्र किसी विषय में दक्षता प्राप्त करता था। आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षण पद्धति की आलोचना करके इससे उपलब्ध ज्ञान को एकांगी बताया था। अतः बालक को

विभिन्न विषयों का पृथक-पृथक ज्ञान प्रदान करना अमनोवैज्ञानिक एवं अव्यवहारिक है क्योंकि संपूर्ण ज्ञान एक अविभाज्य इकाई है। यही सहसंबंध का प्रमुख आधार है। साथ ही अर्जित ज्ञान की व्यावहारिक उपयोगिता के लिये जीवन एवं पर्यावरण से भी उसका सहसम्बन्ध समझना आवश्यक है।

शिक्षा जगत में सह संबंध की नींव डालने का श्रेय प्रसिद्ध जर्मन शिक्षाशास्त्री जे.एफ.हरबार्ट (1776-1841) को है, जिसने 'आत्मबोध के सिद्धांत' का प्रतिपादन करके स्पष्ट किया था कि समस्त ज्ञान का विकास तब ही संभव हो सकता है, जबकि विषयों को संबंधित करके पढाया जाये।

फेयरबीव के अनुसार - ("भूगोल वैज्ञानिक एवं मानवीय दोनों भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूगर्भ शास्त्र, ज्यामिति, खगोलशास्त्र, ऋतु विज्ञान, मानव शरीर-रचनाशास्त्र और दूसरी और इतिहास अर्थशास्त्र, साहित्य और भाषा कार्य आदि से संबंधित है।")

According to Fairgrieve—"Geography as a subject is both scientific and Human : It is related on the one hand to physics, Botany, Geology, Astronomy, Meteorology and Anthropology and on the other to History. Economics and ever literature and language work"

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि भूगोल प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों का समन्वित ज्ञान है; इसके सफल शिक्षण के लिए भूगोल शिक्षक को अन्य स्कूल विषयों का भी समुचित ज्ञान होना आवश्यक है। इससे शिक्षक विभिन्न विषयों के उदाहरण प्रस्तुत करके भूगोल से उनका सहसम्बन्ध स्थापित कर सकता है और अपने शिक्षण को रोचक एवं प्रभावपूर्ण बना सकता है।

**सहसम्बन्ध का अर्थ (Meaning of Curriculum)**— सहसंबंध का शाब्दिक अर्थ है कि विभिन्न विषयों में पारस्परिक संबंध करके पढाना। इस प्रकार विभिन्न विषयों में पारस्परिक संबंध को ही सहसंबंध कहते हैं। सहसंबंध वह पारस्परिक संपर्क है जिसके फलस्वरूप किसी एक क्षेत्र के ज्ञान या कौशल का उपयोग दूसरे क्षेत्र से संबंधित ज्ञान या कौशल को सीखने के लिए सकारात्मक ढंग से किया जा सकता है। पीटर हैलेन ने आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व यह स्पष्ट रूप से कहा था कि - "भूगोल बिना इतिहास के बड़ा ही अस्त-व्यस्त और अस्थिर होगा जिसमें केवल जीवन और गति का वर्णन मात्र होगा और इतिहास बिना भूगोल के बेसिर-पैर की बात होगी। उनका यह कथन भूगोल और इतिहास जैसे विषयों के मध्य विद्यमान सहसंबंध को सूचित करता है।

बरनार्ड के अनुसार, 'सह संबंध विद्यालय के विभिन्न विषयों को यथासंभव एक-दूसरे से संबंधित करने का प्रयास करता है।

According to Barnard, "Correlation tries to make the various school subject relate to one another as far as possible"

(An introduction of teaching—P-73)

डमविल के अनुसार, "एक विषय को दूसरे विषय के अधीन करने के सिद्धांत का साधारणतया सहसम्बन्ध के नाम से उल्लेख किया जाता है।

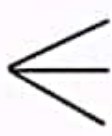
**Dumwille.**"The Principle of subordinating one subject to another is usually referred to under the name of correlation.

(Teaching : Its nature & varieties—P418)

**सहसम्बन्ध का उद्देश्य (Objectives of Curriculum)**— सहसम्बन्ध के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं :

1. छात्रों को ज्ञान के समग्र रूप से परिचित कराना ।
2. छात्रों के श्रम, शक्ति एवं समय की बचत करना ।
3. छात्रों के लिए पाठ्यक्रम के भार को कम करना ।
4. संकीर्ण विशिष्टीकरण के दोषों को दूर करना ।
5. छात्रों को भूगोल के साथ-साथ अन्य विषयों का भी ज्ञान देना ।
6. छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान देना ।
7. पाठ को रोचक, आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण बनाना ।
8. छात्रों को भूगोल विषय की महत्ता का ज्ञान कराना ।

**सहसम्बन्ध के प्रकार (Types of Curriculum)** — सह सम्बन्ध के तीन विभेद हैं—

- 
- उर्ध्वाधर सहसम्बन्ध (Vertical correlation)
  - क्षैतिज सहसम्बन्ध (Horizontal correlation)
  - बाह्यजगत से सहसम्बन्ध (Outer correlation)

1. **उर्ध्वाधर सहसम्बन्ध (Vertical correlation)** — इसके अन्तर्गत एक ही विषय के विभिन्न भागों या तथ्यों में सहसम्बन्ध स्थापित करके पढाया जाता है । यथा—उत्तर प्रदेश में चीनी उद्योग का शिक्षण करने समय यहां की प्राकृतिक दशाओं, जलवायु, निर्यात की सुविधाएं एवं व्यापार आदि में सम्बन्ध स्थापित करके पढाया जाना । इस प्रकार के सहसम्बन्ध से छात्रों को चीनी उद्योग की समुचित जानकारी सरलता से की जा सकती है ।

2. **क्षैतिज सहसम्बन्ध (Horizontal correlation)** — इसमें भूगोल का अन्य विषयों से सम्बन्ध स्थापित करके पढाया जाता है । यथा—भूगोल पढाते समय शिक्षक इतिहास, भाषा, गणित, विज्ञान एवं प्रकृति अध्ययन आदि का भी ज्ञान प्रदान करता है ।

3. **बाह्यजगत से सहसम्बन्ध (Outer correlation)**— इसमें विद्यालय के किसी भी विषय का बाह्यजगत या व्यवहारिकताजन्य परिस्थितियों के साथ स्थापित करने के लिए प्रयास किया जाता है, जैसे—भूगोल विषय का कृषि के साथ सहसम्बन्ध के द्वारा किसी विद्यालयी विषय की व्यावहारिक उपादेयता को ही स्पष्ट करने के लिए प्रयास किया जाता है ।

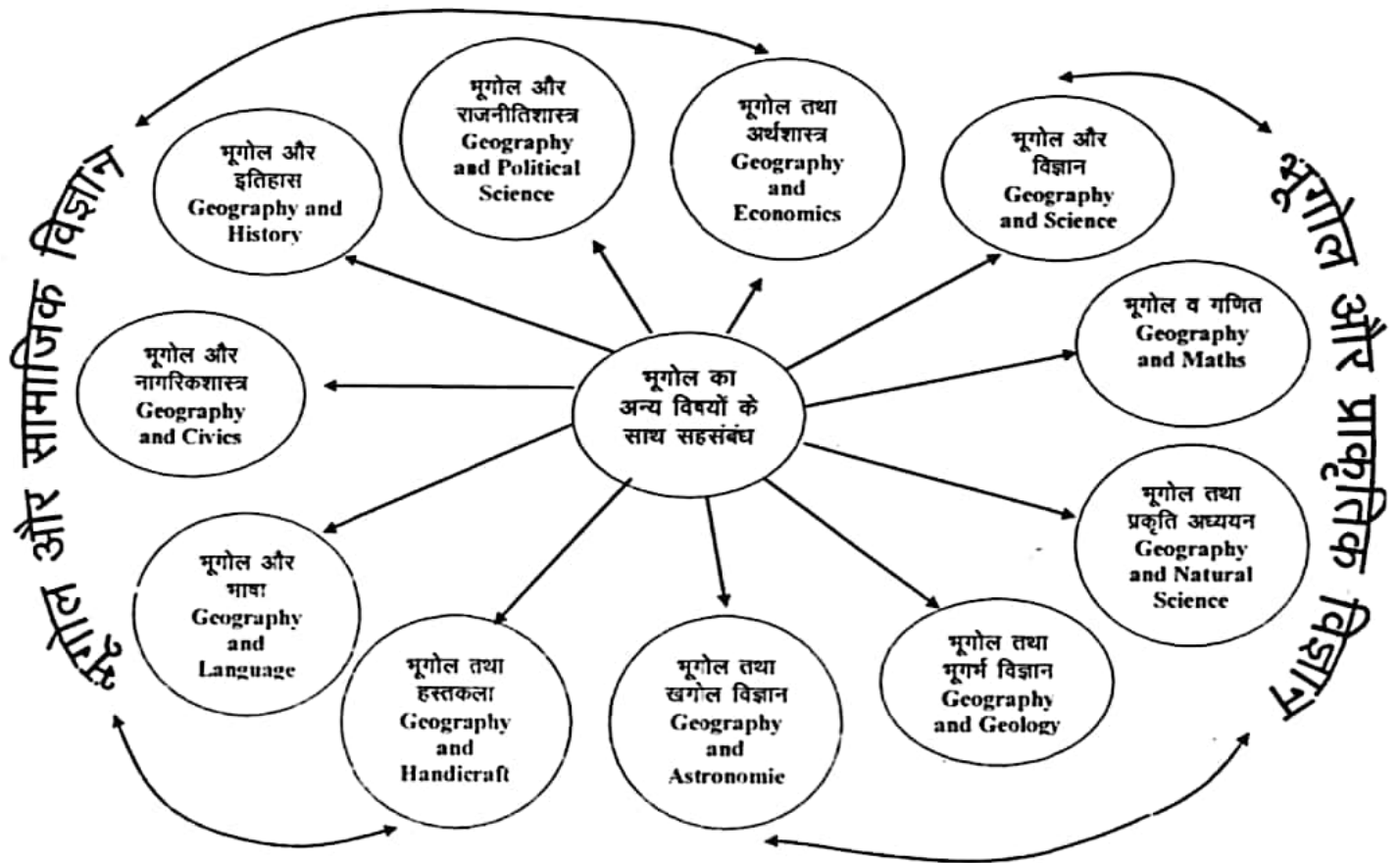
**भूगोल में सहसम्बन्ध का महत्व (Importance of Curriculum In Geography)** — सहसम्बन्ध में सबसे जादा महत्व अन्य विषयों के साथ स्थापित किए जाने वाले सहसम्बन्ध को दिया जाता है । क्योंकि जेम्स फेयरग्रीव महोदय के शब्दों में (भूगोल एक विषय के रूप में वैज्ञानिक तथा मानवीय दोनों ही हैं) ।

इस प्रकार भूगोल वह विषय है जो हमारे दिन प्रतिदिन के जीवन से भी अवश्य ही सम्बन्धित है। भूगोल में सहसम्बन्ध का महत्व निम्न प्रकार से है

- सहसम्बन्ध विषयों की अधिकता को कम करने में उपयोगी है।
- ज्ञान की व्यावहारिकता एवं उपादेयता का बोध हो पाता है।
- शिक्षण की रोचकता एवं प्रभावकारिता में वृद्धि हो पाती है। क्योंकि क्रमबद्धता का अभाव नहीं होता है।
- किसी विषय का शिक्षण किसी अन्य विषय के उदाहरण या तथ्यों के प्रयोग से अधिक रोचक और सजीव बन जाता है।
- संकीर्ण विशिष्टीकरण की कमियों को दूर करने में सहसम्बन्धात्मक प्रणाली अधिक उपयोगी है।
- किसी भी विषयगत ज्ञान को दूसरे विषय से अधिक या कम महत्त्वपूर्ण मानने की प्रवृत्ति कम हो जाती है।

**भूगोल का अन्य विषयों के साथ सह सम्बन्ध (Correlation of Geography with other Subjects)** – भूगोल को प्रारम्भिक काल से ही एक प्राकृतिक विषय के रूप में स्वीकार किया गया है। अंतः विभिन्न प्राकृतिक विज्ञान के विषयों के साथ भूगोल विषय के घनिष्ठ सहसम्बन्ध का होना स्वाभाविक ही है। इसके अलावा भूगोल का अन्य सामाजिक विषयों के साथ भी सम्बन्ध है। इस प्रकार भूगोल विषय का अन्य विषयों के साथ सहसंबंध को निम्न रेखाचित्र द्वारा समझा जा सकता है।

भूगोल और प्राकृतिक विज्ञान	संबंध	भूगोल और सामाजिक विज्ञान
1. भूगोल और विज्ञान		6. भूगोल तथा अर्थशास्त्र
2. भूगोल तथा गणित		7. भूगोल और नागरिकशास्त्र
3. भूगोल तथा प्रकृति अध्ययन		8. भूगोल और राजनीतिशास्त्र
4. भूगोल तथा भूगर्भ विज्ञान		9. भूगोल और इतिहास
5. भूगोल तथा खगोल विज्ञान		10. भूगोल और भाषा
		11. भूगोल तथा हस्तकला



रेखाचित्र – भूगोल का अन्य विषयों के साथ सहसंबंध

1. **भूगोल और विज्ञान (Geography and Science)**—भूगोल कला तथा विज्ञान का समन्वित ज्ञान है। यदि हम भूगोल के स्रोतों अथवा आधारों की खोज करें तो विज्ञान की विभिन्न शाखाओं से हमें भूगोल का ज्ञान लिया हुआ जात होगा।

भूगोल की वनस्पति भूगोल शाखा के अन्तर्गत विभिन्न फसलों, पेड़—पौधों आदि का वर्णन किया जाता है।

भौतिक विज्ञान के ज्ञान से जलवायु विज्ञान का भूगोल में समावेश हुआ है। जिसमें विभिन्न स्थानों की जलवायु पर किन-किन बातों का प्रभाव पड़ता है। इसका वर्णन किया जाता है।

खगोलशास्त्र से मानचित्र विज्ञान का विकास किया गया है।

भूगोल शास्त्र में पृथ्वी की बनावट, चट्टानों की बनावट आदि का वर्णन किया जाता है।

इस प्रकार आज के भूगोल का विज्ञान के साथ घनिष्ठ संबंध है विज्ञान की अनेक खोजों के ज्ञान को इसने अंगीकार किया है।

2. **भूगोल और गणित (Geography and Maths)** – भौगोलिक ज्ञान गणित पर ही आधारित है। मापक, मानचित्र एवं प्रक्षेपों का ज्ञान एवं उनकी रचना, ताप, वर्षा, उत्पादन, जनसंख्या आदि के आंकड़ों का प्रदर्शन, किसी देश या महाद्वीप की स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्र तथा पारस्परिक दूरी आदि जानने के लिए गणित का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। इसीलिए भूगोल की एक शाखा जो पूर्णतः गणित पर ही आधारित है, मानचित्र विज्ञान कहलाती है।

3. **भूगोल तथा प्रकृति अध्ययन (Geography and Nature study)** – भूगोल पृथ्वी के धरातल का विज्ञान है। यह पृथ्वी पर वस्तुओं के जमाव के वितरण के कारणों तथा विभिन्न वस्तुओं के जमाव का वर्णन करता है। वहीं प्रकृति अध्ययन प्रकृति की घटनाओं अथवा पदार्थों का यथार्थनिष्ठ अध्ययन है। इसीलिए भूगोल की एक शाखा प्राकृतिक भूगोल में प्रकृति का अध्ययन किया जाता है।

4. **भूगोल तथा भूगर्भ विज्ञान (Geography and Astronet)** – भूगोल विषय के अन्तर्गत भूसंरचना, संगठन, शैल उत्पत्ति वर्गीकरण, खनिज एवं अयस्क, जीवाश्म, स्फटिक और उनके आंतरिक संगठन आदि के बारे में अध्ययन किया जाता है। यह ज्ञान भूगर्भ विज्ञान की विविध शाखाओं से अन्तर्सम्बन्ध स्थापन के माध्यम से ही गृहीत किए जाते हैं। खनिजीकी, शैलविज्ञान, जीवाश्म विज्ञान तथा स्तरित शैल विज्ञान आदि उप शाखाओं के आधारभूत नियम, सिद्धांत, संकल्पनाओं आदि का उपयोग करते हुए ही भौतिक भूगोल को रूप दिया जा सकता है।

5. **भूगोल तथा खगोल विज्ञान (Geography and Astronet)** – भूगोल भूगर्भ के साथ-साथ महाकाश के बारे में भी हमें विशद जानकारी प्रदान करता है। तारा और सौर मंडल, निहारिकाएं आकाशगंगा, प्रकाशवर्ष, ग्रह, उपग्रह, धूमकेतु आदि की जो जानकारी भूगोल पढ़ने से हमें प्राप्त हो सकती है। वह समस्त खगोल विज्ञान की ही देन है। सौरमंडल में ग्रहों की संख्या, आकार, सूर्य की दूरी, परिक्रमा मार्ग तथा गतिवेग आदि के बारे में आधुनिक और यथार्थ अवधारणा, खगोलविज्ञान की अत्याधुनिक खोजों पर ही निर्भरशील है।

6. भूगोल तथा अर्थशास्त्र (Geography and Economics) – प्राकृतिक सम्पदाएं भूगर्भ में किस स्थान पर और किस मात्रा में विद्यमान हैं, इनका समुचित ज्ञान भूगोल द्वारा प्राप्त होता है। प्राकृतिक सम्पदा का उत्पादन एवं उपयोग किस प्रकार हो, किस प्रदेश को किस वस्तु की आवश्यकता है और उसकी पूर्ति कहां से और किस प्रकार की जा सकती है इसका ज्ञान अर्थशास्त्र से प्राप्त होता है। उदाहरण – पृथ्वीतल पर जनसंख्या का वितरण आदि का भूगोल एवं अर्थशास्त्र दोनों ही विषयों में अध्ययन होता है।

मार्शल के अनुसार, "जीवन की सामान्य दशाओं में मानवता का अध्ययन करना ही अर्थशास्त्र है यह उन व्यक्तियों और सामाजिक कार्यों की छानबीन करता है, जिनका भौतिक सुखों के साधनों की प्राप्ति और उपयोग से अत्यन्त निकट संबंध है।"

According to Marshall, "Economics is a study of mankind in the ordinary business of life, it examines that part of the individual and social action which is closely connected with attainment and with the use of the material requisites of well being."

इस प्रकार स्पष्ट है कि भूगोल एवं अर्थशास्त्र स्पष्ट हैं।

7. भूगोल और नागरिक शास्त्र (Geography and Civics) – किसी स्थान विशेष की भौगोलिक स्थिति उसके राजनीति महत्व का कारण होती है। यथा—दक्षिणी पश्चिमी एशिया में पेट्रोलियम की प्राप्ति, भारत और पाकिस्तान के लिए कश्मीर की स्थिति तथा अरब देशों के मध्य स्वेज नहर आदि। इनकी पृष्ठभूमि में भौगोलिक परिस्थितियाँ ही हैं। जिनके कारण इनका इतना अधिक राजनीतिक महत्व है। इसके साथ ही भूगोल विश्व की राजनीतिक समस्याओं के समाधान में भी विशेष सहायता कर रहा है।

8. भूगोल और इतिहास (Geography and History) – भूगोल और इतिहास एक सिक्के के दो पहलू के समान हैं। पृथ्वी का वर्णन ही भूगोल कहा गया और पृथ्वी पर होने वाले क्रियाकलाप इतिहास।

काण्ट ने लिखा है, 'काल के अनुसार वर्णन करना इतिहास है। स्थान के अनुसार भूगोल है। इतिहास भूगोल से केवल समय तथा क्षेत्र के विचार में भिन्न है।

Kant writes, "The description according to time is history that according to space is geography. History according to geography only in consideration of time and area," (The Nature of Geography : P-135)

9. भूगोल और भाषा (Geography and Language) – भौगोलिक घटनाओं, मनोहारी सुरम्य दृश्यों एवं पर्वतीय घाटियों, कल-कल नाद करते झरनों, और नदियों आदि का निरीक्षण करते; विभिन्न कवियों एवं लेखकों ने सुरम्य एवं सुललित वर्णन भाषा में व्यक्त किये हैं। इसके अतिरिक्त भौगोलिक कहानियों, भ्रमण, यात्राओं एवं खोजों के वर्णन तथा विभिन्न देशों के निवासियों के सजीव वर्णन भी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में स्थापित करके विषयवस्तु को सरल एवं रोचक बनाया जा सकता है। यथा—कालीदास द्वारा मेघदूत काव्य में कश्मीर से विंध्याचल पर्वत

तक का भौगोलिक वर्णन भाषा एवं भूगोल के सहसम्बन्ध का उत्कृष्ट उदाहरण कहा जा सकता है।

**10. भूगोल और हस्तकला (Geography and Handicraft) –** भूगोल शिक्षक हस्तकला के चक्र में छात्रों से विविध प्रकार के चित्र, रेखाचित्र एवं मानचित्र के फ्रेम तैयार कराना, मॉडल, विज्जिप्टिपट्ट एवं फ्लेनेलबोर्ड बनाना आदि कार्य करा सकता है। इससे छात्र स्वयं क्रिया करके सीखेंगे और भूगोल में रुचि लेंगे। इसके अतिरिक्त छात्रों में रचनात्मक प्रकृति का विकास होगा। क्योंकि हस्तकला ऐसा विषय है, जिसमें छात्रों के हाथों एवं नेत्रों को प्रशिक्षित करने की शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार भूगोल का हस्तकला से सहसम्बन्ध स्थापित करने से छात्रों की कर्मेन्द्रियां प्रशिक्षित एवं परिष्कृत होगी और प्राप्त ज्ञान स्थायी होगा।

**सारांश (Summary) –** इस प्रकार अन्ततः यह कहा जा सकता है कि भूगोल वह विषय है जिसका प्राकृतिक तथा सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों के साथ सार्थक और सकारात्मक विज्ञान के विभिन्न विषयों के साथ सार्थक और सकारात्मक सहसंबंध विद्यमान है और सहसम्बन्धित ढंग से यदि उन विषयों का अध्ययन किया जाता है तो न केवल पाठ्यक्रम भार में कमी होगी बल्कि छात्रों को ज्ञान की समग्रता का यथार्थ बोध हो सकेगा और वे एक विषय के ज्ञान की सहायता से दूसरे विषय को सरलतापूर्वक सीख सकेंगे।

---